Navchetana Homilies

JUNE 16, 2019

Rom 5:1-5

Jn 16:12-15

पवित्र त्रित्व

मैं कई साल पहले केथौलिक युवा समूह के कार्यक्रमों में शामिल हुआ करता था। हँसी–मजाक करते बैठे युवा–युवतियों को शांत करने, उनका ध्यान आकर्षित करने के प्रभावी तरीकों में से एक यह है कि उनके नेता से कहे कि क्रूस के चिन्ह से प्रारंभ करें। जैसे ही नेता शुरू करते हैं– "पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम पर आमेन।" पूरा समूह शांत होकर उसमें शामिल हो जाता था। यह एक नाटकीय तरीका था। लेकिन क्रूस का चिन्ह हमें गंभीरता से, सावधान पूर्ण लेना चाहिए।

सुबह उठकर हम अपना दिन क्रूस के चिन्ह से प्रारंभ करते हैं। और रात को आराम करने के पहले भी हम क्रूस का चिन्ह अपने माथे पर लगाते हैं। हमारे दिन का प्रारंभ और समाप्ती इसी चिन्ह से है। हम सब लोगों ने बचपन में जो प्रार्थना पहले सीखी वह भी यही हैं, और हर प्रार्थना या काम प्रारंभ करने के पहले हम क्रूस का चिन्ह लगाते हैं। हम किसी चर्च में प्रवेश करते समय भी अपनी उँगलियाँ पवित्र जल में डुबोकर माथे पर क्रूस का चिन्ह लगाते हैं। हर एक ख्रीस्तान के जीवन में क्रूस के चिन्ह की व्यापक मौजूदगी

यह व्यक्त करता है कि यह हमारे संपूर्ण जीवन की जड़ में हैं। लेकिन एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रभाव यह हो सकता हैं कि हम बिना सोचे–समझे आदतवश यह करते जाते हैं। हम यह भूल जाते है कि हम ईश्वर का स्मरण करते हैं जिस ईश्वर में तीन व्यक्तियाँ हैं– पिता, पुत्र और पवित्रात्मा। और तीन व्यक्तियाँ होते हुए भी ईश्वर एक है पवित्र त्रित्व। यह हमारे विश्वास का सनातन सत्य है। आज हम पवित्र त्रित्व का पर्व मना रहे हैं। पवित्र त्रित्व के बारे में समझना और समझाना कठिन हैं। संत अगेस्टिन के बारे में कहा गया एक प्रसंग हैं। वह पवित्र त्रित्व के बारे में पूरी बातें समझाते हुए एक ग्रंथ लिखने की कोशिश में थे। इसके बारे में सोचते हुए वह समुद्रतट पर चल रहे थे। तब उन्होंने देखा एक बच्चा एक सीपी में समुद्र जल भर कर एक छोटे से गड्ढे में डाल रहा है, उन्होंने उस बच्चे से पूछा– "तुम क्या कर रहे हो?" बच्चे ने कहा– "मैं इस समुद्र का पूरा पानी इस गड्ढे में भरने जा रहा हूँ।" अगेस्टिन ने कहा– "यह तो असंभव हैं। समुद्र का पूरा पानी कैसे इस छोटे से गड्ढे में आयेगा?"

तब बच्चे ने कहा– "आप भी तो वही कर रहे हैं। क्या, समुद्र से भी विशाल, पूरे विश्वमण्डल के सृष्टा को क्या आप अपने ग्रंथ में संग्रहित कर सकेंगे? ईश्वर को कौन पूरी तरह समझ सकता हैं? हम एक इंसान को भी अच्छी तरह से समझ नहीं पाते। क्या हम अपने आप को भी पूरी तरह से समझ सकते हैं? यह समस्या आदि मनुष्य के समय से चली आ रही हैं। इसलिए उन्होंने अपने समझ के परे सभी ताकतों को ईश्वर का नाम दिया जैसे– अग्नि, वायु, मेघ गर्जन, बहुत बड़े पर्वत या पेड़ आदि।

प्रभु येसु ने ईश्वर के स्वरूप को हमारे सामने प्रकट किया– एक ही ईश्वर जो तीन व्यक्तियों का समूह या परिवार के समान हैं। वह किसी सिंहासन में विराजमान नहीं बल्कि जीवन का स्त्रोत हैं, प्यार का स्त्रोत हैं, शक्ति का स्त्रोत हैं, उद्‌गम हैं। उसने कहा– "ईश्वर प्रेमी पिता है जो अपने खोये हुए बेटे की राह देखते हैं, उनकी वापसी पर उनकी गलतियाँ माफ करके उन्हें प्रेम करते हैं। **(Luke 15:11-32)** वह आकाश के पक्षि और खेत के फूल को संभालता–सवारता हैं जो अपनी संतान को उनसे बढ़कर संभालेगा। **(Mt 6:23-26)** पूरे सुसमाचार में हम देखते हैं कि येसु, पिता ईश्वर के प्रेम के बारे में समझाकर नहीं थकते–नहीं रूकते। येसु ने पवित्रात्मा के बारे में भी कहा। वह शक्ति का आत्मा हैं, शांति का आत्मा हैं और ज्ञान का आत्मा हैं। "जब वह सत्य का आत्मा आयेगा, तो वह तुम्हें संपूर्ण सत्य तक ले जायेगा।" (योहन 16:13) जब येसु ने अपने शिष्यों को भेजा उनसे कहा– "पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम पर बपतिस्मा दो।" जो शक्ति उन्होंने ग्रहण की है उसी शक्ति से बपतिस्मा दो– पिता ने जो शक्ति दी हैं, जो शक्ति पुत्र से मिली हैं, जो शक्ति पवित्रात्मा प्रदान करती है उसी शक्ति से बपतिस्मा दो। हमने अपने बपतिस्मा में वही ईश्वरीय प्रेम और शक्ति ग्रहण किया है। उसी प्रेम और शक्ति का उत्सव पवित्र त्रित्व का पर्व है।

जब भी हम क्रूस का चिन्ह लगाकर कहते हैं पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम पर आमेन। तब हम उसी शक्ति को ग्रहण करते हैं, उसी प्रेम का अनुभव करते हैं या वही हमारा

अनुभव होना हैं। पिता और पुत्र और पवित्रात्मा की स्तुति हो, जैसे वह आदि में थी, अब है और अनंत काल तक सदा रहेगी– आमेन।

Fr. James ML CMI